# पानी

डॉ. मेहता नगेन्द्र सिंह

भीषण गर्मी का दिन। छाया की खोज में चलते-चलते थक गया। लाचार होकर नदी-किनारे एक ठूँठ के सहारे बैठ गया। अवचेतन में कानों से कुछ शब्द-ध्वनियां टकराई-

"पानी हूँ। प्रकृति-प्रदत्त अमृत-धन, जीवन-तत्व। गरीब-अमीर एवं अन्य सभी निरीह जीवधारियों के लिए बना हूँ, निःशुल्क वितरण की प्राकृतिक सामग्री। यही कारण है कि धरती पर जीवधारियों के उद्‌भव के पूर्व सृष्टिकर्त्ता के द्वारा मेरा सृजन किया गया, ताकि प्रत्येक जीवधारी मुझे ग्रहण कर अपने को गतिशील बनाते हुए विकसित करता रहे।"

"तरल हूँ, रंगहीन हूँ एवं गंधहीन हूँ। धरती की चट्‌टानी कोख से प्रस्फुटित होकर झरनों एवं नदियों के माध्यम से आप तक पहुंचता रहा हूँ। आकाश से भी बरसता रहा हूँ। धरती पर लगभग तीन-चौथाई भागों में आच्छादित हूँ। कूप, तालाब और जलाशय में संग्रहित हूँ। सागर मेरा सबसे बड़ा संग्रहालय है। परन्तु, वहां खारा हूँ। सिर्फ, समुद्र और बादल बनने के काम आता हूँ।"

कण-कण में व्याप्त हूँ। ईश्वर की तरह सर्वव्यापी हूँ। यहां तक कि सभी जीवधारियों के रक्त में मौजूद हूँ। सागर-पुत्रों के मोक्ष के लिए धरती पर उतारा गया। मोक्षदायिनी गंगा की काया बना। खेत, बगान और प्राकृतिक परिवेश की हरियाली मुझसे ही सिंचित होती रही। मेरा परिवहन-तंत्र भी निर्बाध चलता रहा। मेरी शास्त्रीयता की चर्चा विभिन्न ग्रंथों में अंकित है, जो पूजनीय और प्रातः स्मरणीय है।"

"कल तक, बहुत खुश और आनन्दित था। किन्तु, आज प्रदूषित होकर अत्यन्त दुखी हो गया हूँ। इस बाबत मेरी व्यथा-कथा की कोई सीमा नहीं। 'सृष्टि-कथा अनन्ता' जैसी।"

"जी हाँ, थोड़ा और ठहरिये। चलते-चलते कुछ गुजारिश करना चाहूंगा कि आप मुझे और अधिक प्रदूषित न करें। मेरा व्यापार भी न करें। किसी को करने भी न दें। और न मुझे जल-युद्ध का कारण बनायें।

चेतन में आते ही देखा, छिछले पानी के ऊपर धीमी गति से तैरते कूड़े-कचरे के बीच एक मवेशी की लाश पर कुछ कौए उछल-कूद रहे हैं। दुर्गन्ध के कारण वहां और बैठ पाना मुश्किल लगा।

## जल (दोहे)

जल ही जीवन है, कहा, सबने मिलकर आज।
जल पर भी निर्भर रहा, सारा जैव समाज।।

जल से उपजी सृष्टि यह, जल ही इसकी जान।
इसकी कीमत से कभी, मत रहिए अनजान।।

बूंद-बूंद जल की अगर, कीमत लें पहचान।
कभी नहीं सूना दिखे, खेत और खलिहान।।

नदी-जलाशय पोखरे, हैं जल के भंडार।
युगों-युगों से बन रहे, जीने का आधार।।

पानी के हर बूंद की, करें सही उपयोग।
दोहन इसका रोकने, बाहर निकलें लोग।।

बिन पानी होती नहीं, फसल कभी आसान।
पानी के उपयोग पर, देना होगा ध्यान।।

पानी के रहते हुए, पड़ता नहीं अकाल।
जलचर जितने हैं यहां, रहते सब खुशहाल।।

जल बिन जीवन है कठिन, कहते सभी सुजान।
जीव-जन्तु सहित पादप, जल है सबकी जान।।

पानी के हर बूंद को, अमृत जैसा मान।
इसके ही आधार पर, टिकी सभी की जान।।
विषमय होता जा रहा, अब नदियों का नीर।
क्यों कोई सुनता नहीं, इसकी गहरी पीर।।

दूषित जल के मेल से, बदले मिट्टी-स्वाद।
अन्न अधिक उपजा नहीं, खेत हुआ बरबाद।।

दूषित जल के पान से, होता उदर विकार।
कभी मनुज इस रोग से, जाता स्वर्ग सिधार।।

नाली में नित बह रहा, सब शहरों का पाप।
इक दिन तो बन जायेगा।, यही हमारा शाप।।

जल को लेकर युद्ध का, समा बना इस बार।
इसके चलते विकल है, यह सारा संसार।।

सरिता-जल प्रदूषित हुआ, जलचर हैं बीमार।
जीवन देने के लिए, शीघ्र करें उपचार।।

जीवन का जल के बिना, नहीं चलेगा चाक।
बात प्रलय की कह गये, साधक मुनि चरवाक।।

दूषित जल का शीघ्र ही, करें उचित उपचार।
वन-उपवन सीचें सदा, उत्तम यही विचार।।

नदी जलाशय, कूप को, रखना होगा साफ।
वर्ना भावी पीढ़ियां, नहीं करेंगी माफ।।

## ग़ज़ल

पानी का पानी बना रहे सोचिए कैसे
दरिया में पानी सदा रहे सोचिए कैसे

जंगल कहता बादल में बरसाओ पानी
पेड़ों से जंगल घना रहे सोचिए कैसे

पानी से ही जीवन का फूल खिला करता है
फूलों से जीवन सजा रहे सोचिए कैसे

सावन-भादों पानी का मौसम कहलाता
मौसम का आना लगा रहे सोचिए कैसे

बारिश के पानी को इधर-उधर मत बहने दें
पोखर में पानी जमा रहे सोचिए कैसे

माना कि पानी का भंडार बहुत है लेकिन
दोहन भी इसका रुका रहे सोचिए कैसे

पानी की बर्बादी पर रोक लगे तो अच्छा
पीने भर पानी बचा रहे सोचिए कैसे

गफलत में जो सोये हैं उन्हें जगा दो 'मेहता'
पानी को लेकर वो जगा रहे सोचिए कैसे

*संपर्क करें:*
**डॉ. मेहता नगेन्द्र सिंह**
**'हरित वसुन्धरा', ओ/50 डॉक्टर्स कॉलोनी, कंकड़बाग,**
**पटना-800 020**
**मो.नं. 09471651540**